श्रुतपंचमी पर्व

Presentation by:

विकास छाबड़ा (जैन), इंदौर

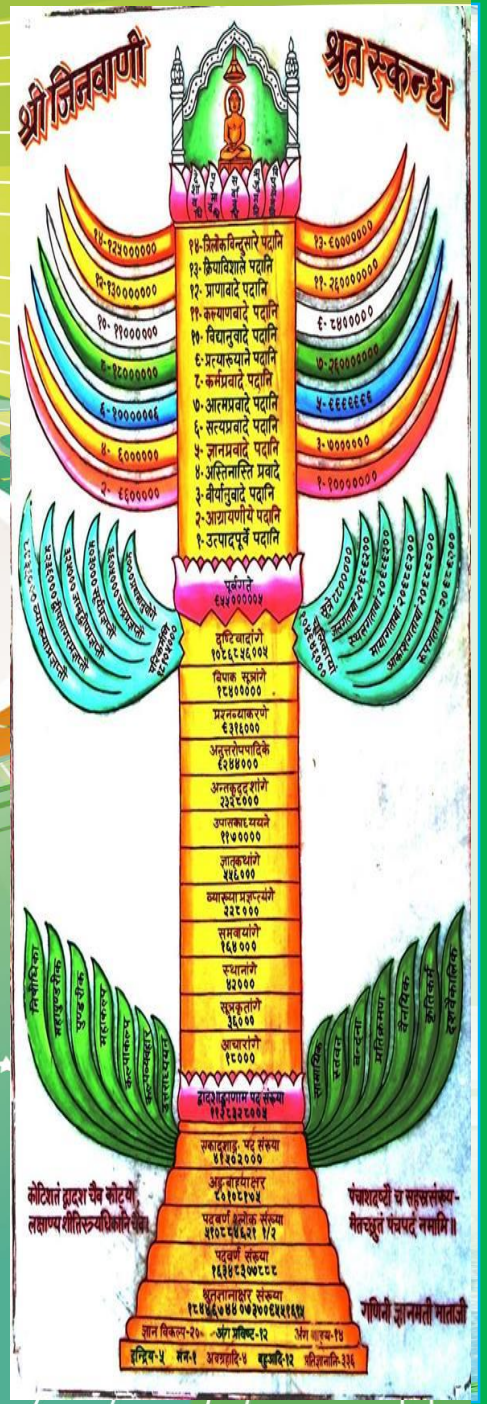

जयउ धरसेणणाहो, जेण महाकम्मपयडीपाहुडसेलो ।
बुद्धिसिरेणुद्धरीओ, समप्पिओ पुप्फयंतस्स ॥

जिन्होंने महाकर्म प्रकृति प्राभृतरूपी शैल (पर्वत) का अपने बुद्धिरूपी शिर से उद्धार किया और पुष्पदंत आचार्य को समर्पित किया ऐसे धरसेन-आचार्य जयवंत होवें ।

www.JainKosh.org

महावीर स्वामी के मोक्ष जाने के बाद गौतम-स्वामी केवलज्ञानी हुए

- चतुर्थ काल के 3 वर्ष 8 मास शेष रहने पर महावीर स्वामी मोक्ष गए ।

गौतम स्वामी के मोक्ष जाने के बाद सुधर्म आचार्य केवलज्ञानी हुए

- 12 वर्ष बाद अर्थात् पंचम काल के 8 वर्ष 4 मास होने पर

सुधर्म आचार्य के मोक्ष जाने के बाद जम्बूस्वामी केवलज्ञानी हुए

- 12 वर्ष बाद अर्थात् पंचम काल के 20 वर्ष 4 मास होने पर

फिर जम्बूस्वामी भी 38 वर्ष विहार करके मुक्त हुए ।

इस तरह महावीर स्वामी के मुक्त होने के पश्चात् लगभग 62 वर्षों तक केवलज्ञानी होते रहे ।

www.JainKosh.org

अगले 100 वर्षों में

ये 5 मुनिराज पूर्ण श्रुतकेवली अर्थात् 11 अंग, 14 पूर्वधर हुए

विष्णु

नन्दिमित्र

अपराजित

गोवर्धन

भद्रबाहु

अगले 183 वर्षों में

ये मुनिराज 11 अंग व 10 पूर्वधारी हुए

विशाखा चार्य	प्रोष्ठिल	क्षत्रिय	जयसेन
नागसेन	सिद्धार्थ	धृतषेण	विजय
बुद्धिलिंग	देव	धर्मसेन	

अगले 220 वर्षों में

ये मुनिराज 11 अंग धारी हुए

क्षत्र

जयपाल

पाण्डु

ध्रुवसेन

कंस

www.JainKosh.org

अगले 118 वर्षों में

ये मुनिराज आचारांग धारी हुए

सुभद्र

यशोभद्र

भद्रबाहु द्वि.

लोहाचार्य

www.JainKosh.org

ये मुनिराज अंग, पूर्व के अंशों के धारी हुए

विनयदत्त

श्रीदत्त

शिवदत्त

अर्हद्दत्त

www.JainKosh.org

⌘इस प्रकार भगवान् महावीर स्वामी के मोक्ष जाने के लगभग 683 वर्षों तक

⌘केवलज्ञानी, श्रुतकेवली, अंग-पूर्वधर होते रहे ।

⌘फिर अंग-पूर्वधरों का व्युच्छेद हो गया ।

www.JainKosh.org

अर्हद्बलि नामक मुनिराज हुए। इन्होंने युग-प्रतिक्रमण करवाया

- इनके द्वारा संघ व्यवस्था कराई गयी ।
- जो गुफाओं से आये थे उन्हें वीर अथवा नंदी नाम दिया
- जो अशोक वृक्षों से आये थे उन्हें अपराजित अथवा देव नाम दिया
- पंचस्तूप से आये थे उन्हें सेन और भद्र नाम दिया
- जो शाल्मली वृक्षों से आये थे उन्हें गुणधर अथवा गुप्त नाम दिया
- जो केशर वृक्षों से आये थे उन्हें सिंह अथवा चन्द्र नाम दिया

www.JainKosh.org

धरसेन आचार्य

सौराष्ट्र देश के जूनागढ़ के निकट उर्ज्जयंत पर्वत की चन्द्रगिरी पर विराजमान

आग्रायणीय पूर्व के पंचम वस्तु में चौथे महाकर्म प्रकृति प्राभृत के ज्ञाता

श्रुत के विच्छेद का विकल्प

आन्ध्रदेश में वेणाक नदी के समीप मुनि समूह के पास ब्रह्मचारी द्वारा पत्र सम्प्रेषण

www.JainKosh.org

मुनिराज द्वारा पत्र प्राप्ति

दो मुनिराज का आचार्य के प्रति गमन

आचार्य धरसेन को स्वप्न

दोनों मुनिराजों द्वारा आचार्य की वंदना

2 दिन के उपवास सहित मंत्र सिद्धि द्वारा परीक्षा

www.JainKosh.org

मंत्र की सिद्धि होने पर

एक लम्बे दांत वाली देवी और

एक कानी देवी प्रकट हुई

मुनिराज द्वारा मंत्र की शुद्धि

पुनः सिद्धि

www.JainKosh.org

मंत्र सिद्ध होने पर

क्या आज्ञा है? – ऐसा देवियों ने पूछा ।

मुनिराज ने कहा - हम लोगों के इस लोक और परलोक सम्बन्धी कोई भी कार्य नहीं है जो आप दोनों द्वारा सिद्ध करना हो ।

www.JainKosh.org

मुनिराज द्वारा आचार्य को सम्पूर्ण वृत्तान्त निवेदन

आचार्य धरसेन ने दोनों मुनिराजों को उत्तम तिथि, नक्षत्र, समय में आगम की व्याख्या प्रारंभ की ।

आषाढ़ शुक्ल एकादशी को ग्रन्थ का अध्ययन समाप्त हुआ ।

www.JainKosh.org

आचार्य धरसेन द्वारा दोनों मुनिराजों को आचार्य बनाया गया ।

तभी ज्येष्ठ मुनिराज के दांतों की पंक्ति को देवों द्वारा सम कर दिया गया और उनका नाम आचार्य द्वारा पुष्पदंत प्रसिद्ध किया ।

दूसरे मुनिराज का भी नाम भूतबली रखा गया

भूत जाति के देवों द्वारा बलि याने पूजा, जय-जय नाद

www.JainKosh.org

दोनों मुनिराज का विहार

कुरीश्वर नामक नगर की ओर

वहीं चातुर्मास

पश्चात् विहार

www.JainKosh.org

पुष्पदंत आचार्य द्वारा जिनपालित को दीक्षा

पश्चात् पुष्पदंत आचार्य वनवास देश में ठहरे और

भूतबली आचार्य मदुरै ठहरे ।

www.JainKosh.org

पुष्पदंत आचार्य द्वारा जिनपालित को छह खण्डों की शिक्षा

सत्प्ररूपणा के 177 सूत्रों की रचना कर जिनपालित को भूतबलि आचार्य के समीप भेजा

www.JainKosh.org

भूतबली आचार्य द्वारा 6,000 सूत्र सहित ग्रन्थ की रचना

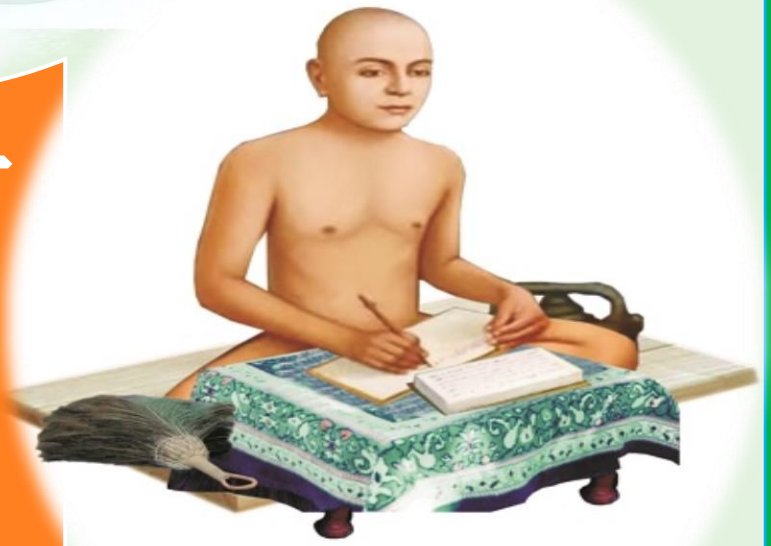

40,000 सूत्र प्रमाण महाबंध की रचना

www.JainKosh.org

इस प्रकार महाबन्ध पूर्ण करके

पुस्तकों में ग्रन्थ को आरोपण करके

ज्येष्ठ शुक्ल पंचमी को ग्रन्थ सम्पूर्ण हुआ ।

उसी दिन से यह श्रुत पंचमी पर्व प्रारंभ हुआ ।

चतुर्विध संघ के सन्निधि में महापूजा

www.JainKosh.org

सम्पूर्ण ग्रन्थ जिनपालित के साथ पुष्पदंत आचार्य के पास भेजे गए ।

आचार्य के सान्निध्य में पूजन ।

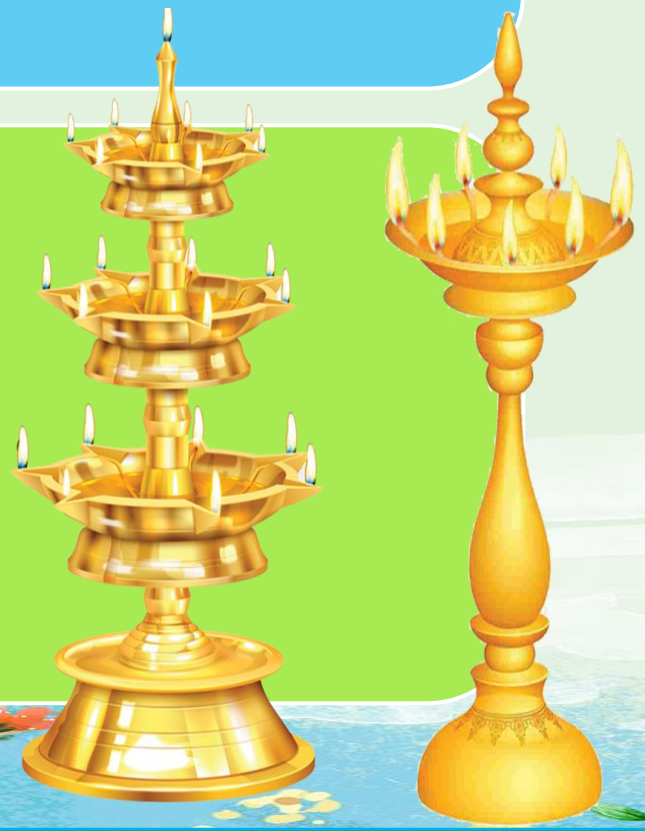

www.JainKosh.org

फिर तो ग्रन्थ हजारों लिखे,
ऋषि मुनियों ने ज्ञान प्रधान ।
चारों ही अनुयोग रचे
जीवों पर करके करुणा दान ।

- Reference : आचार्य इंद्रनंदी कृत श्रुतावतार, धवल पुस्तक 1, 9

Presentation developed by
Shri Vikas Chhabra

- For updates / feedback / suggestions, please contact
  - www.jainkosh.org
  - ☎: 94066-82889

www.JainKosh.org